मंगलाचरण

कविवर पंडित संतलालजी कृत

श्री सिद्धचक्र विधान पूजा

: मधुर स्वर :

पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मंगलाचरण

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दोहा

जिनाधीश शिवईस नमि, सहसगुणित विस्तार।
सिद्धचक्र पूजा रचूँ, शुद्ध त्रियोग सम्हार।।
नीत्याश्रित धनपति सुधी, शीलादिक गुण खान।
जिनपद अंबुज भ्रमर मन, सो प्रशस्त यजमान।।
देश काल विधि निपुणमति, निर्मल भाव उदार।
मधुर बैन नयना सुघर, सो याजक निरधार।।
रत्नत्रय मण्डित महा, विषय-कषाय न लेश।
संशय-हरण सुहित-करन, करत सुगुरु उपदेश।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

छप्पय

निर्मल मंडप भूमि दरब-मंगल करि सोहत।
सुरभि सरस शुभ पुष्प-जाल, मंडित मन मोहत।।
यथायोग्य सुन्दर मनोज्ञ, चित्राम अनूपा।
दीरघ मोल सुडोल, बसन झखझोल सरूपा।।
हो वित्त-सार प्रासुक दरब, सरब अंग मनको हरै।
सो महाभाग आनंद सहित, जो जिनेन्द्र अर्चा करै।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दोहा

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सुर-मुनि मन आनन्दकर, ज्ञान सुधारस धार।
सिद्धचक्र सो थापहूँ, विधि-दव-जल उनहार।।

अडिल्ल

'अर्हं' शब्द प्रसिद्ध अर्ध-मात्रिक महा,
अकारादि स्वर मंडित अति शोभा लहा।
अति पवित्र अष्टांग अर्घ करि लायके,
पूरब दिशि पूजों अष्टांग नमायके।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये नमः पूर्वदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

वर्ण कवर्ग महान, अष्ट पूर्वविधि अर्घ ले।
भक्ति भाव उर ठान, पूजों हो आग्नेय दिशि।।

ॐ ह्रीं अर्हं क ख ग घ ङ अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये आग्नेयदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण चवर्ग प्रसिद्ध, वसुविधि अर्घ उतारिके।
मिलि है वसुविधि रिद्धि, दक्षिण दिशि पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ ञ अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये दक्षिणदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

सोरठा

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

वर्ण टवर्ग प्रशस्त, जलफलादि शुभ अर्घ ले।
पाऊँ सब विधि स्वस्ति, नैऋत्य दिशि अर्चा करौं।।

ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ ण अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये नैऋत्यदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण तवर्ग मनोग, यथायोग्य कर अर्घ धरि।
मिलि है सब शुभ योग, पश्चिम दिशि पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध न अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये पश्चिमदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

वर्ण पवर्ग सुभाग, करूँ आरती अर्घ ले।
सब विधि आरति त्याग, वायव दिशि पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ म अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये वायव्यदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण यवर्गी सार, दर्व-अर्घ वसु द्रव्य करि।
भाव-अर्घ उर धार, उत्तर दिशि पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये उत्तरदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सोरठा

शेष वर्ण चउ अन्त, उत्तम अर्घ बनाइकें।
नशे कर्म वसु भंत, पूजों हो ईशान दिशि।।

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये ईशानदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।